घर को छोड़ कर आए हैं और दूसरे, बापदादा के घर में आए हैं। तो ज़रूर उनको याद करते होंगे अर्थात् घर छोड़ा तो सारा परिवार छोड़ा। फिर यहाँ आ करके खाना-पीना-बैठना एक के घर में और याद करना दूसरे को, ये तो ठगी हो जाएगी। क्यों? तो बाप ने समझाया है– एक होती है अव्यभिचारी याद, दूसरी होती है व्यभिचारी याद। व्यभिचारी माना बहुत मित्र-संबंधियों को याद करना। ठीक है ना। (कोई होते हैं जो) कोई (को) भी याद करें और कोई होते हैं नहीं, हम(को) तो एक, दूसरा न कोई। कहते हो ना बरोबर। तो एक माना वो हो गया अव्यभिचारी याद। अभी दूसरे कोई की भी याद पड़ती है तो हो जाती है व्यभिचारी याद। सुनना भी ऐसे होता है। बाप ने समझाया है बहुत दफा कि भक्ति भी अव्यभिचारी शिव की और फिर औरों को याद करना, वो हो जाती है व्यभिचारी भक्ति। देखो, भक्ति में भी ऐसे ही है। याद करना तो एक को याद करना; क्योंकि अभी तुम बच्चों को ज्ञान मिला वो एक तो हमारा कमाल करके विश्व का मालिक कर देते हैं ; इसलिए जो याद करते हैं वो एक को ही याद करना चाहिए। तुम तो जानते हो बच्चे कि बहुतों की याद करते हैं। तो याद सिर्फ देवी-देवताओं की या ईश्वर की, बाबा इसके फर्क में नहीं आते हैं। माना मेरा तो एक है। तो एक भक्तिमार्ग में भी भक्ति करना, पूजा करना, फलाना करना; क्योंकि भक्ति में याद तो पड़ती है ऐसे ही। अगर एक की याद है तो वो बहुत अच्छा होगा; क्योंकि.....बाबा भी कहते हैं कि हमने भी तो पहले-2 ही शिवबाबा की भक्ति की है। तो हमने बहुत भक्ति की है। अव्यभिचारी से उतर करके व्यभिचारी में चले आए हैं। अभी बच्चों को क्या करना चाहिए जब अंजाम करते हम एक को ही याद करेंगे, सो तो बाप रोज़-2 ऐसे ही कहते हैं। बच्चे कहते हैं– बाबा, हमको शिवबाबा याद नहीं पड़ते हैं। तो बाबा कहते हैं– वाह! तुम जब भक्तिमार्ग करते थे, तभी भी इंजाम करते थे हम शिवबाबा की ही याद करेंगे, अव्यभिचारी भक्ति करेंगे, दूसरा कोई को नहीं ; क्योंकि दूसरा कोई भी फायदा पहुँचाने वाला नहीं (है) ; क्योंकि यही है पतित-पावन। और तो किसको कहा नहीं जाता है। ना ब्रह्मा को, ना विष्णु को, ना शंकर को, ना लक्ष्मी को, ना नारायण को, ना अम्बा को, कोई को भी पतित-पावन नहीं कहा जाता है। एक को ही कहा जाता है। तो वो भी ऊँचे ते ऊँचा। भक्ति में भी वो ऊँचे ते ऊँचा। अभी ये भक्ति तो नहीं है बच्चों को, अभी बच्चों को है ज्ञान। उसमें भी है याद। किसकी? ज्ञान के सागर की। तो फिर उनको याद करना पड़ता है; क्योंकि खुद ज्ञान सागर कहते हैं। तो जो भक्ति में कहते थे, जब आएँगे तब आपकी याद (में) रहेंगे; क्योंकि उस समय में आत्मा को यह समझ तो होती है ना कि बाप है, आएँगे तो उनकी ही याद करेंगे, तभी तो उनसे वर्सा मिलेगा ना। तो ये सभी बातें बच्चों को याद करनी चाहिए कि हम भक्तिमार्ग में भी कहते थे....अभी तो बाप आए हुए हैं। एक की याद, फिर दूसरे कोई की याद नहीं करनी चाहिए। यहाँ के मित्र-संबंधियों से देवताएँ तो और ही अच्छे हैं। फिर भी इन्ट्रिम(बीच में) इन अनेकों को याद करने से ; ये तो सभी विकारी छीः-छीः हैं ना। तो उनको भी याद करने से फिर व्यभिचारी याद हो जाती है। अगर शिवबाबा को याद करें तो उसे कहा जाता है अव्यभिचारी। अभी हरेक अपने-2 से पूछे कि हम एक को याद करते हैं या अनेक मित्र-संबंधियों (आदि को याद करते हैं) ; क्योंकि अंजाम तो यही किया है, दूसरा कोई भी कारण देने की दरकार ही नहीं है। और कारणों को डाल देते हैं पानी में; क्योंकि

समझते हैं कि .. उस बाप को याद करेंगे तो उनसे और दिल भी लगानी है, उनसे फल मिलने का है। अगर बुद्धि वहाँ से टूट कर और संबंधियों के पास गई तो व्यभिचारी याद हो जाती है। तो हर एक अपने से पूछे कि हम अव्यभिचारी याद में रहते हैं या व्यभिचारी मित्र-संबंधी या कोई भी गुरु-गोसाईं (की याद में रहते हैं)? अभी तुम बच्चों के गुरु-गोसाईं तो सब छूट गए। अब उनकी पूजा तो छोड़ दी। अभी बाकी रही याद मित्र-संबंधियों की। अरे, वो भी मित्र-संबंधियों की औरों की याद हो जाती है। बाप कहते हैं– नहीं, मुझे ही याद करो और मित्र-संबंधियों को छोड़ दो ; क्योंकि ये मित्र-संबंधी भी खत्म हो जाएँगे। पीछे इस बारी तो तुमको सभी मित्र-संबंधी दैवी गुणों वाले मिलेंगे। जो बन रहे हैं उनमें से मिलेंगे। इसलिए ये बाप को याद करने से, नई दुनिया में जाने से, फिर तुम्हारे मित्र-संबंधी सब एकदम नए मिलेंगे। पुराने छीः-छीः नहीं मिलेंगे; क्योंकि पुराने तो सब भ्रष्टाचारी हैं ना। तो यह जाँच करना है कि मेरे को जो श्रेष्ठाचारी बनाते हैं या जो याद है, जिससे श्रेष्ठाचारी बनते हैं, उनको याद करें या मित्र-संबंधियों को या देवताओं को याद करें? यह हमेशा अपने ऊपर जाँच रखनी होती है। कहा भी तुमने है, बाबा से इंजाम भी तुमने किया है कि बाबा, जब आप आएँगे तब आपका ही बनेंगे। अभी अपने से पूछो कि हमारा बनते हो या दूसरे को(का)? तो बरोबर तुम जब यह कहते हो, आपको इतने समय याद किया, तो बाकी (समय) किसको याद करते हो वो बताओ। तो देखो, उस याद में कितने आते होंगे? ढेर के ढेर आते होंगे। याद करनी है एक की। बाप भी कहते हैं ना कि इंजाम है; इसलिए तुम मुझ अपने पारलौकिक बाप को याद करो; क्योंकि वो है पतित-पावन। तो ऐसे-2 समझ करके, कोशिश करके दूसरी जगह से हटा करके फिर बाप को ही याद कर लेना और फिर भी महिमा सहित। ये भी समझते हैं कि बाबा को जितना याद करेंगे उतना हमारे पाप कट जाएँगे। है सिर्फ याद की यात्रा। ऐसे नहीं कि जितना हम याद करेंगे उतना बाबा याद करेंगे। ऐसे कोई कायदा नहीं है। बाबा को कोई अपना पाप काटने का है क्या! शिवबाबा को कोई पापात्मा कहा जाता है क्या? पाप आत्मा कहा जाता है मनुष्यों को। यहाँ देवताएँ तो होते ही नहीं हैं। बाकी रहे मनुष्य, वो सभी पापात्मा हैं ; क्योंकि ये दुनिया ही पापात्माओं की है। पुण्यात्माओं की दुनिया तो दूसरी होती है ना। यह तो तुम अच्छी तरह से जानते हो। भले जिसके लिए कोई भी मनुष्य कहते हों..अभी सतयुग के आने में 40,000 (वर्ष) देरी है ; क्योंकि कलहयुग की आयु ही इतनी है, तो वो तो बात ही दूसरी (हो जाती है)। वो समझते हैं ना कि बाप आएँगे, जब वो डायरैक्शन देंगे तब हम बाप को याद करेंगे। अभी बाप को याद करेंगे, क्या करेंगे? कहाँ जायेंगे ? 40,000 वर्ष पड़े हुए हैं। फिर तो याद करके करेंगे ही क्या! समझा ना बच्चे! वो उनके लिए है जो जानते नहीं हैं। तुम तो अच्छी तरह से जानते हो। अगर नहीं जानते तो तुम यहाँ आते नहीं। यहाँ आ करके बैठते नहीं। यहाँ बैठते भी हो पावन बनने के लिए और ये भी जानते हो, निश्चय है कि हम यहाँ पतित-पावन के आगे बैठे हुए हैं ; क्योंकि शिवबाबा भी तो यहाँ ही है ना। तो देखो, उन्होंने लोन लिया हुआ है। शरीर तो अपना है नहीं। इसलिए घड़ी-2 भूल जाते हैं। नहीं तो अंजाम है जरूर, वो बाप से ही भक्तिमार्ग में जन्म-जन्मांतर का अंजाम है कि बाबा, जब आप आएँगे तो..आपका बनेंगे, आपका बन करके फिर नई दुनिया के मालिक बनेंगे। तो हमेशा दिल से पूछते रहो। ऐसे पूछते-2 ऐसे नहीं कि कनेक्शन,

लिंक कोई जुट जाती है। यह तो सभी बच्चे जानते हैं कि बाप से बुद्धियोग की लिंक घड़ी-2 टूट जाती है। बाप कहते हैं फिर भी कोशिश करके, यहाँ-वहाँ से फिर आय करके फिर भी बाप की याद में लग जाओ; क्योंकि वो बाबा जानते हैं कि लिंक टूटनी है ज़रूर। घड़ी-2 टूटेंगी।....और जो भी जगह से हट करके फिर बाप को याद करेंगे, फिर भूल जाएँगे। इसको ही कहा जाता है ना कि इस समय में ये 'भूलभुलैया का खेल' है ; क्योंकि अभी चल रहा है प्रैक्टिकल में और बाप फिर समझा रहे हैं ये जो भूल होती है वो जितना जो बाप को याद करेंगे (उतना पाप कटेंगे) । याद का अर्जन करने की भी तो बाबा मार्जिन देते हैं, कितनी महिमा करते हैं कि याद करते-3 तुम्हारे सब पाप कट जाएँगे। फिर नं०वार पुरुषार्थ तो करते ही हैं और अगर अच्छी तरह से याद में रहें तो फिर इस डिनायस्टी में आ जाएँगे। तो अपनी जाँच करते रहो। तभी बाबा कहते हैं ना रात को बैठकर के ; अपनी डायरी रखो और स्मृति में बैठो कि सारे दिन में कहाँ-2 हमारी बुद्धि गई? फिर वो भी अगर लिख दिया तो बाबा समझ जाएँगे और.....तुम बच्चों को समझाएंगे। कहेंगे भई, कहाँ क्यों चले गए? तुम जब भक्तिमार्ग (में) थे तब ही तो कहते थे हम आपको याद करेंगे। अभी लिस्ट बताओ, कहाँ चले गए? तो फिर बाबा समझाएगा। जब ये चार्ट वगैरह बहुत आते हैं ना तो उनमें ये लिखना चाहिए। वो तो ठीक है, (जो) लिखते हो कि हम दो मिनट, 10 मिनट, दो घंटा, डेढ़ घंटा बाबा की याद (में) (रहा)। बाकी याद कहाँ गई, वो लिखो। समय सबका लिखो तो बाबा उनके ऊपर भी, खाली एक / दो दृष्टांत लिखेंगे तो ...मैं सबकी बताय दूँगा; क्योंकि किन-2 की ऐसी-2 दशा जाती होंगी।...दो / तीन की पढ़ेंगे तो बता देंगे, कहाँ-2 जाते हैं, आत्मा कहाँ दौड़ती है। आत्मा नहीं दौड़ती है, आत्मा में जो मन-बुद्धि है (वो) भागती है। .....कहते हैं मन भागता है। .....इतनी जब अपने ऊपर घड़ी-2 खबरदारी रखेंगे ना। तुम जो बाबा को याद कर रहे हो ना, वो कौन-सा बाबा? उनको तो हमने 84 जन्म याद किया। फिर भी 84 जन्म में घाटा ही पाया ना। थोड़ा-4 घाटा आता गया ना। वो तो तुम्हारा वर्सा था, तभी भी दिन-प्रतिदिन घाटा तो रहता है ना..। नई जो जगह है उनको घाटा तो रोज़ का लगता है ना। रोज़-3 करते कहेंगे, हाँ पाँच वर्ष हुआ, भई इतना घाटा हुआ। पाँच वर्ष में फट से तो घाटा नहीं होता है ना। कदम-2 पर घाटा, कदम-2 पर फायदा। बाप कहते हैं ना, कदम-2 पर पदम। फिर वो पदम कहाँ चले गए? फिर नीचे उतरते इस समय कदम-2 पर कुछ कम, घाटा। तो तुम बच्चे अगर अपन (से) ऐसे-2 बात करते रहेंगे ना, विचार-सागर-मंथन चलता रहेगा। यह सबके लिए है विचार-सागर-मंथन कर ज्ञान के रत्न निकालना। यह ज्ञान है ना। बाबा ज्ञान सुनाते हैं ना। तो हर एक को फिर अपना-2 बुद्धि चाहिए। अगर बाप की याद में रहेंगे तो, बाबा की याद में एकाग्रचित्त हो करके। अभी जैसे वाडा(कारपेन्टर) काम करते हैं। वो थोड़े ही बाप को याद करते होंगे। तुम खड़े जो देखते होंगे याद कर सकते हो; क्योंकि उनकी बुद्धि काम में है, उनको फिनिश करना है; तुम्हारी बुद्धि बाप में है, उनसे वर्सा ले लेना है। तो याद में रात-दिन का फर्क है ना। तो ऐसी-2 बातें आप अपने से करते रहो। समझा ना! करते रहेंगे ,छूट गया, दुबारा ऐसे-2 भी विचार के(को) ले आएँगे ये, क्या रखा है जाओ जा करके कोई अपना धंधा-धोरी करें, यह करें, वो करें। ऐसे-2 भी खयालात आ जाएँगी। दुनियावी छीः-छीः खयालात भी आ जाएँगी। कभी-2 कौड़ियाँ कमाने की भी फिर

वासना आ जाएगी। सुनते तो रहते हो ना कि ये धंधा करते हैं ...कमाते हैं, फलाना करते हैं। ये तो जो धनवान होंगे, उनको तो बहुत आते हैं। अभी बाबा क्या करे? बाबा क्या अभी कहेंगे कि हम फलाना धंधा करें? हमारा जवाहरात का धंधा इतना मीठा था। ऐसा सहज था। अरे, कुछ भी नहीं करें। हम सिर्फ खरीद करें और फट से बेच देवें। कोई भी धक्का खाने की दरकार नहीं। धक्का भी दलालों को खाना पड़े। हम सिर्फ टेबल पर बैठ करके, व्यापारी आवे उनसे हम हीरा युक्ति से लेवें। युक्ति हमारी यही थी कि सदैव छाँट करके लेना। यह एक मेरे को हॉबी थी। तो बस छाँट करके लेना, दलालों को देना। जा करके बेच कर आओ, पैसा ले करके आओ। और कुछ नहीं। अभी ये चीज़ ऐसी है, जो कोई लेने वाले हों, बेचने वाले हों, सोझरा चाहिए। रात को इस समय में कोई हीरे की चीज़ लेंगे? रात को नहीं ले सकेंगे। रात को अगर लेंगे तो विश्वास पर लेंगे। तो इसलिए बस, थोड़ी शाम हुई, यह भागा बाबा, यह समझ करके कि शाम को कौन आकर लेंगे। कोई दलाल को हम हीरा देंगे तो क्या हमको बेचकर देंगे? अभी लेंगे तो दे ही देंगे, सो तो कभी भी दिन में ले आकर देंगे। शाम को क्यों आएँगे मेरे पास? शाम को मेरे पास आएँगे ही नहीं। शाम पाँच बजे तुम चाय पीती हो ना। तो वहाँ का भी हमारा टाइम चाय पीने का ही होता था, चाय पीया और यह भागा। तो दलाल-व्यापारियों को सबको मालूम होता था कि बाबा, यह शाम को बरसात होगी, तो भी जा करके फुटबाल, मैच या जो-जो भी बरसात में ..... है ना। ना होगी तो हॉकी पर जाएँगे। ठंडी होगी तो क्रिकेट पर जाएँगे। हाँ भी सबकी थी। सुना मैच मैचेज़। ऐसे तो रोज़ होती रहती है। मैच (देखने) यह भागा; क्योंकि फखुर था कि यह तो कोई बड़ी बात थोड़े ही है हीरा कोई से लेना, लेना भी (है तो) अच्छी तरह से लेना। व्यापारी भी समझे, यह <u>गर्म</u> व्यापारी है। वो ऐसा कोई भी तकलीफ नहीं लेता था। यह हमारी प्राइवेट तकलीफ है। जो भी व्यापारी आएगा पूछूंगा बताओ, एजेन्ट हो या मालिक हो? .....क्योंकि अगर एजेन्ट हो, <u>तो वो एक-आध गलत–सलत मिलाय दे, बना दे,</u> वो बेच तो सकेंगे ही नहीं। कायदा ही नहीं है। धनी होगा तो धनी से तो जो चाहिए सो भी कर सकते हैं। भले वो हीरे वाले सब जानते हैं; परन्तु उनको हुकुम नहीं है। वो एक हीरा भी दूसरे में मिलाय नहीं सकते हैं। समझो कि जो धनी होगा, वो आएगा तो हम.....कितना है? दस पुड़िया है। अच्छा, कितने कैरेट हुए? भई, दो सौ कैरेट हुए या तीन सौ कैरेट हुए। हम बोलेंगे– अच्छा, छोड़ करके जाओ। हम देख करके रखेंगे। सो तो सभी छोड़ कर जाते ही हैं। जो अच्छे व्यापारी होते हैं (तो) कोई रसीद-वसीद लेने की दरकार नहीं रहती है। अरे भई, इसमें (है) बुद्धि का योग। जैसे तुम भी मेहनत करते हो, यह भी मेहनत करते हैं। जब भी बच्चों को समझाना है तो बाप का ही परिचय देना है यहाँ। अरे भाई, बाप तो दो हैं ना। एक हद का, (एक है) बेहद का। अभी हद का चल रहा है। आधा कल्प हुआ। आधा कल्प बेहद का मिला था, जिसको स्वर्ग और त्रेता कहते थे। उसको द्वापर और कलहयुग कहते थे। देखो, दो बाप का वर्सा है ना। अभी यह कलहयुग पूरा होता है ..अभी सतयुग आता है। सतयुग में पतित तो नहीं जाएँगे। बस, बाबा को अच्छी तरह से याद करो तो तुम्हारे पाप कट जाएँगे और गुल-गुल हो जाएँगे, अच्छे हो जाएँगे। फिर जितनी याद करेंगे इतना पवित्र बनेंगे और इतना ही दर्जा मिलेगा; क्योंकि सज़ा खाएँगे। बहुत याद करेंगे, याद करते-2 जाकर मिलेंगे और कोई भी याद नहीं आएगा

उस समय में तो बड़ा फायदा है ..बहुत फायदा है। तुम बच्चे यह अच्छी तरह से जानते हो ; परन्तु बीच में लड़ाई है माया की। प्योर भी रहेगा, तो जो वाणी है, मुरली है, वो धारण भी होती रहेगी और सहज ते प्वाइंट को खैंचेंगे तो चली आएँगी। अगर न याद करते होंगे, पतित होंगे, तो फिर उन प्वाइंट्स की भी इतनी जल्दी याद नहीं आएगी। तो याद में भी और ज्ञान में भी कच्चे पड़ जाएँगे। तो यह तुम बच्चों का पुरुषार्थ यहाँ यही चलता है। फिर किनको तकदीर के अनुसार समय मिलता है और(तो) पुरुषार्थ करते हैं। कोई को समय नहीं मिलता है तो पुरुषार्थ नहीं करते हैं। वो अपने आप से पूछ लेंगे देखो– हम कहाँ तक याद करते हैं? तो जहाँ तक याद करेंगे, खुशी का पारा भी तुम्हारे ऊपर चढ़ेगा। ऑटोमैटिकली ज़रूर चढ़ेगा; क्योंकि चढ़ा हुआ था सो उतरा है, फिर उस प्वाइंट पर आएँगे तो फिर भी चढ़ता ही जाएगा। बाबा बच्चों को समझानी बहुत अच्छी देते हैं ; परन्तु पार्टधारियों का पार्ट तो नूँधा हुआ है। तो बेचारे जितनी कल्प पहले कोशिश की है इतनी कोशिश करते हैं। पीछे कोई की प्रैक्टिस अच्छी होती है, किसकी कम होती है, किसकी कम होती है ;क्योंकि यह भी समझ की बात है, स्कूल है, तो ज़रूर याद किसकी कम, किसकी उससे कम, (किसकी) उससे जास्ती हो सकती है ना। अभी भी पुरुषार्थ करते हो, नहीं जुटती है, यह भी कल्प-2 ऐसे ही हुआ है। पीछे भले तुम कितना भी कोशिश करो; परन्तु अगर कल्प पहले तुम्हारी अगड़म-बगड़म हो जाती है, तो अभी भी अगड़म-बगड़म होती जाएगी। है आखिर ड्रामा ...कल्प–2 ..जो भी। पीछे तुम कितना भी ... गिनती करो। अपरम्पार तुम आ करके यह पुरुषार्थ करते हो ना तो अपरम्पार यह पुरुषार्थ एक जैसा ही चलता रहेगा। जास्ती याद बाबा की, वो है श्रीमत। जितनी कम याद बाबा की, वो (है) माया की मत। ये लड़ाई चलती रहती है। इसलिए इस लड़ाई में जीत पहनने के लिए विचार-सागर-मंथन करो और कुछ....। तुम वास्तव में परवश हो और ईश्वर अपने वश में कर रहा है। माया अपने वश करती है, ईश्वर अपने वश करते हैं– ये खेल है। घृणा (आदि) की कोई नहीं आती है, खेल है जो बाप समझाते हैं। ....पड़ते हैं; क्योंकि ये तो अनेक बार यह सब पार्ट बजाते हैं। तो उनको जरा भी नहीं, अपन को होता है ज़रूर। कुछ न कुछ होता है। ना हो तो झट कर्मातीत अवस्था हो जाए। फिर तो हमको नई दुनिया चाहिए। यहाँ हम एक सेकण्ड भी नहीं रह सकें; परन्तु नहीं, यह ड्रामा बना हुआ है; क्योंकि कर्मातीत अवस्था तक आ जाते हैं तो फिर तुम्हारे लिए नई दुनिया चाहिए क्योंकि टाइम तो मिलता है ना अभी..शाम है, रात है, बैठकर क्या करेंगे? बैठ जाओ, बाबा को याद करो, जाँच करो– बुद्धि कहाँ जाती है, कहाँ हमको कोई अंगुली लगाती है। जैसे जब युद्ध करते हैं तो बड़ा खबरदार रहते हैं। मल्लयुद्ध करते हैं, बड़ी खबरदारी रखते हैं। यहाँ तो नहीं लगाते हैं, यहाँ तो नहीं लगाते हैं.....वो पैर ऐसे–2 करते रहेंगे। अपन को ऐसे हटाते रहेंगे।.....(कोई ने) मल्लयुद्ध नहीं देखी होगी, कोई ने बॉक्सिंग नहीं देखी होगी, कोई ने कुश्ती नहीं देखी होगी, कोई ने कबड्डी–2.....कितना उस्तादी से भागते रहते हैं। .. हार-जीत का खेल है ना.....।

सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का दिल व जान, सिक व प्रेम से यादप्यार और गुडनाइट। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप की नमस्ते। ✶